SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का क्वांटम सिद्धांतः भारत–चीन के विशेष संदर्भ में

चन्द्र प्रकाश पाठक, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

चन्द्र प्रकाश पाठक, शोध छात्र

E-mail : cppathakalld@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/05/2026
Revised on : 03/07/2026
Accepted on : 12/07/2026
Overall Similarity : 00% on 04/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Jul 4, 2026 (01:06 PM)
Matches: 0 / 3784 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

इक्कीसवीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप परंपरागत न्यूटोनियन दृष्टिकोण की व्याख्यात्मक क्षमता सीमित होती दिखाई देती है। राष्ट्र–राज्यों को स्थिर, तर्कसंगत और केवल शक्ति–संतुलन के आधार पर संचालित इकाइयों के रूप में देखने वाली शास्त्रीय अवधारणाएँ आज के जटिल, अनिश्चित और बहुआयामी वैश्विक परिवेश को पूर्णतः स्पष्ट करने में पर्याप्त नहीं हैं। क्वांटम प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर डोमेन तथा अंतरिक्ष–आधारित संचार प्रणालियों के विकास ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति, सुरक्षा और रणनीति की पारंपरिक अवधारणाओं को पुनर्परिभाषित किया है। इसी परिवर्तित संदर्भ में क्वांटम अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा क्वांटम स्टेटक्राफ्ट जैसी नवीन वैचारिक रूपरेखाएँ अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन हेतु एक अभिनव दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। यह अध्ययन भारत–चीन संबंधों का विश्लेषण अलेक्जेंडर वेंड्ट के क्वांटम दृष्टिकोण के आलोक में करता है। शोध का मूल तर्क है कि दोनों देशों के मध्य प्रतिस्पर्धा अब केवल सीमावर्ती विवादों, समुद्री प्रभाव–क्षेत्रों अथवा पारंपरिक सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि क्वांटम कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, क्वांटम संचार तथा उन्नत प्रौद्योगिकी के अभौतिक क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुकी है। इस नई परिस्थिति में अनिश्चितता, पारस्परिक निर्भरता, बहुस्तरीय अंतःक्रिया तथा रणनीतिक उलझाव भारत–चीन संबंधों की प्रमुख विशेषताएँ बनकर उभरते हैं। शोध का उद्देश्य यह प्रतिपादित करना है कि क्वांटम अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का दृष्टिकोण भारत–चीन संबंधों की जटिलताओं, अप्रत्याशित घटनाओं तथा बदलते शक्ति–संतुलन को समझने के लिए परंपरागत यथार्थवादी प्रतिमानों की अपेक्षा अधिक प्रभावी विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है। यह अध्ययन समकालीन भू–राजनीतिक विमर्श में एक नवीन सैद्धांतिक योगदान प्रस्तुत करते हुए यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि भविष्य की वैश्विक राजनीति को समझने के लिए क्वांटम आधारित वैचारिक प्रतिमान अधिक प्रासंगिक, यथार्थपरक और व्याख्यात्मक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्द

यथार्थवाद, भू–राजनीतिक, बिलियर्ड बॉल्स मॉडल, क्वांटम अंतर्राष्ट्रीय संबंध, क्वांटम स्टेटक्राफ्ट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता.

परिचय

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रसिद्ध सामाजिक रचनावादी विचारक अलेक्जेंडर वेंड्ट (Alexander Wendt) ने अपनी पुस्तक "Quantum Mind and Social Science" में क्वांटम सिद्धांत को सामाजिक विज्ञान से जोड़ा है। उनके अनुसार चेतना और सामाजिक जीवन, अंततः स्थूल क्वांटम यांत्रिक घटनाएँ हैं, जो शास्त्रीय भौतिकी से नहीं, बल्कि क्वांटम भौतिकी के नियमों से संचालित होती हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अनुशासन में अलेक्जेंडर वेंड्ट कि वैचारिकी एक अभूतपूर्व सैद्धांतिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है, जो शास्त्रीय भौतिकवाद की सीमाओं को पार करते हुए मानव चेतना और राज्य के व्यवहार को समझने के लिए एक नवीन सत्तामीमांसीय आधार प्रदान करता है। उनकी 1999 की ऐतिहासिक कृति, ''सोशल थ्योरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स'' (Social Theory of International Politics), ने पहले ही केनेथ वाल्ट्ज़ के नव–यथार्थवादी ढांचे को चुनौती देकर रचनात्मकतावाद को स्थापित किया था। वाल्ट्ज़ का नव–यथार्थवाद पूरी तरह से न्यूटोनियन भौतिकी (Newtonian physics) और शास्त्रीय यांत्रिकी से प्रेरित था, जहां राष्ट्र–राज्यों को ''बिलियर्ड बॉल'' के रूप में देखा जाता था ऐसी स्वायत्त और भौतिक इकाइयाँ जो अराजक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में केवल अपनी भौतिक शक्ति और अस्तित्व के लिए एक–दूसरे से टकराती हैं (Waltz, 1979, पृ. 93)। हालाँकि, वेंड्ट ने अपनी 2015 की विवादास्पद और युगांतकारी पुस्तक, ''क्वांटम माइंड एंड सोशल साइंसः यूनिफाइंग फिजिकल एंड सोशल ऑन्टोलॉजी'', में इस पूरी मान्यता को ही उलट दिया है। वेंड्ट का तर्क है कि जब तक सामाजिक विज्ञान मानव मस्तिष्क और चेतना को केवल न्यूरॉन्स का एक रासायनिक या विद्युत नेटवर्क (शास्त्रीय भौतिकवाद) मानता रहेगा, तब तक हम कूटनीति, राष्ट्रीय पहचान और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों की गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जटिलताओं को नहीं समझ पाएंगे। इसके बजाय, वेंड्ट एक रेडिकल प्रस्ताव रखते हैंः मानव चेतना वास्तव में एक मैक्रोस्कोपिक क्वांटम यांत्रिक घटना है, और इसलिए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मूल अभिनेताओं को क्वांटम प्रणालियों के रूप में ही विश्लेषित किया जाना चाहिए।

वेंड्ट का यह सिद्धांत हमें यह समझने के लिए एक विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है कि राज्यों की पहचान, उनके भू–राजनीतिक हित और उनका कूटनीतिक व्यवहार पहले से तय या स्थिर नहीं होते हैं, बल्कि वे निरंतर बदलती संभावनाओं के एक विशाल सागर में तैरते रहते हैं, जिन्हें केवल क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों जैसे सुपरपोजिशन और एंटैंगलमेंट के माध्यम से ही समझा जा सकता है। यह विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्थिर, यांत्रिक और मृत संरचना के बजाय एक जीवंत, चेतन और गतिशील क्वांटम क्षेत्र के रूप में स्थापित करता है। इस क्वांटम प्रतिमान में कूटनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को शास्त्रीय कार्य–कारण के रैखिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि क्वांटम ''सुपरपोज़िशन'' और ''वेव फंक्शन कोलैप्स'' के माध्यम से समझाया गया है। ''क्वांटम एंटैंगलमेंट'' का दूसरा सबसे ज्वलंत और प्रभावशाली उदाहरण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और उभरते ''टेक्नो–सिक्योरिटी'' मॉडल में देखा जा सकता है, जो मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा को परिभाषित कर रहा है। शास्त्रीय भू–राजनीति मुख्य रूप से भूमि, समुद्र और वायु डोमेन पर भौतिक नियंत्रण पर केंद्रित थी, लेकिन इक्कीसवीं सदी का कूटनीतिक ''एंटैंगलमेंट'' सिलिकॉन चिप्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डेटा संप्रभुता के इर्द–गिर्द बुना गया है।

यदि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखे तो इस क्वांटम प्रणाली में ताइवान और वैश्विक अर्धचालक पारिस्थितिकी तंत्र एक ''सुपरपोजिशन'' की स्थिति में विद्यमान हैं। जब संयुक्त राज्य अमेरिका ''चिप्स एंड साइंस एक्ट'' पारित करता है या चीन की उन्नत प्रौद्योगिकी तक पहुंच को सीमित करने के लिए कठोर निर्यात नियंत्रण लागू करता है, तो यह कूटनीतिक कदम केवल एक द्विपक्षीय व्यापारिक निर्णय नहीं होता। इसका ''एंटैंगल्ड'' प्रभाव तुरंत नीदरलैंड की चिप–निर्माताओं (जैसे–ASML) अत्याधुनिक कंपनियों के व्यापारिक निर्णयों, जापान की औद्योगिक नीतियों, और दक्षिण कोरिया के रणनीतिक संरेखण को अनपेक्षित रूप से बदल देता है। इस ''टेक्नो–सिक्योरिटी'' प्रतिमान ने एक ऐसी अंतरराष्ट्रीय प्रणाली को जन्म दिया है जहाँ ''आर्थिक अन्योन्याश्रयता'' को ही एक घातक भू–राजनीतिक हथियार के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है, जिसे अकादमिक विमर्श में ''वेपनाइज्ड इंटरडिपेंडेंस'' कहा जाता है। हेनरी फारेल (Henry Farrell) और अब्राहम न्यूमैन जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांतकारों ने इस घटना की व्याख्या करते हुए यह स्थापित किया है कि वैश्विक नेटवर्क में जो राज्य केंद्रीय नोड्स को नियंत्रित करते हैं, वे दूसरों को अपनी रणनीतिक इच्छा के अनुसार ढालने के लिए ''चोकपॉइंट्स'' का उपयोग कर सकते

हैं। इसी प्रकार चीन का अपने ''बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव'' के माध्यम से वैश्विक दक्षिण में ''डिजिटल सिल्क रोड'' (Digital Silk Road) का विस्तार करना मात्र एक बुनियादी ढांचा परियोजना नहीं रह जाती, बल्कि यह पश्चिमी शक्तियों की साइबर सुरक्षा के लिए एक तात्कालिक क्वांटम प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। इस प्रणाली में, कोई भी तकनीकी या सामरिक कदम अलगाव में नहीं उठाया जा सकता। अतः, इन ''एंटैंगल्ड'' प्रणालियों में शास्त्रीय शक्ति संतुलन का सिद्धांत काफी हद तक अपर्याप्त और अप्रचलित प्रतीत होता है, क्योंकि यहाँ शक्ति किसी एक भौगोलिक या सैन्य स्थान पर केंद्रित नहीं है, बल्कि वह विशाल नेटवर्क के भीतर होने वाली अंतःक्रियाओं और संभावनाओं में फैली हुई है, जिन्हें केवल एक समग्र, सत्तामीमांसक और अंतःविषय विश्लेषणात्मक ढांचे के माध्यम से ही समझा और डिकोड किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अलेक्जेंडर वेंड्ट का क्वांटम सिद्धांत– सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में, जब एक कूटनीतिज्ञ या राज्य प्रमुख किसी गंभीर संकट जैसे सीमा विवाद या व्यापार युद्ध के दौरान रणनीतिक विकल्पों पर विचार करता है, तो उसका मस्तिष्क किसी एक पूर्व–निर्धारित निर्णय की ओर नहीं बढ़ रहा होता है। इसके विपरीत, निर्णय लेने के उस क्षण से ठीक पहले तक, कूटनीतिज्ञ का मस्तिष्क विभिन्न संभावित रणनीतियों (सहयोग, संघर्ष या तटस्थता) के एक क्वांटम सुपरपोज़िशन में स्थित होता है, जहां सभी संभावनाएं एक साथ यथार्थ के रूप में मौजूद होती हैं। जिस क्षण कोई अंतिम निर्णय लिया जाता है या कोई कूटनीतिक बयान जारी किया जाता है, वह क्षण वास्तव में क्वांटम संभावनाओं के एक ही वास्तविकता में ''ढहने'' (wave function collapse) की प्रक्रिया है। यह दृष्टिकोण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कर्ता (agents) केवल बाहरी संरचनाओं के निष्क्रिय शिकार नहीं हैं, बल्कि उनकी चेतना सक्रिय रूप से वास्तविकता का निर्माण कर रही है। यह केनेथ वाल्ट्ज़ के संरचनात्मक नियतिवाद के सीधे विरोध में खड़ा होता है, और गेम थ्योरी (Game Theory) के नैश इक्विलिब्रियम (Nash Equilibrium) जैसे विशुद्ध रूप से तर्कसंगत और गणितीय मॉडलों में मानव मनोविज्ञान की अप्रत्याशितता को शामिल करने की मांग करता है।

इसके अतिरिक्त, वेंड्ट का ''क्वांटम उलझाव'' का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में ''नॉन–लोकेलिटी'' (non-locality) की अवधारणा को प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्र–राज्यों की अलगाववादी समझ को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। यद्यपि विश्व के नेता और राष्ट्र–राज्य भौगोलिक सीमाओं और संप्रभुता के आवरण में एक–दूसरे से भौतिक रूप से अलग प्रतीत होते हैं, वेंड्ट तर्क देते हैं कि उनका मन, उनकी भाषा और उनके साझा सामाजिक अर्थ उन्हें एक गहरे क्वांटम स्तर पर एक–दूसरे में ''उलझा'' देते हैं। हेगेलियन श्मालिक–गुलामश (master-slave) द्वंद्वात्मकता का उदाहरण इस अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है। एक की पहचान दूसरे के बिना अस्तित्वहीन है, ठीक वैसे ही जैसे दो क्वांटम रूप से उलझे हुए कण अंतरिक्ष में विशाल दूरी के बावजूद एक–दूसरे की स्थिति को तुरंत प्रभावित करते हैं। आधुनिक भू–राजनीति में, इसका अर्थ यह है कि एक राष्ट्र की विदेश नीति या राष्ट्रीय पहचान में सूक्ष्म परिवर्तन (उदाहरण के लिए, एक क्षेत्र में आक्रामकता की धारणा) दुनिया के दूसरे छोर पर बैठे राष्ट्र की कूटनीतिक और सामरिक मुद्रा को तुरंत और अदृश्य रूप से बदल देता है (Zanotti, 2019, पृ. 45–48)। इस संदर्भ में, भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि एक क्वांटम माध्यम है जो विभिन्न चेतनाओं को एक सामूहिक सामाजिक वास्तविकता में बांधती है। यह परिप्रेक्ष्य न केवल अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के अध्ययन को एक नया आयाम प्रदान करता है, बल्कि यह शोधकर्ताओं को यह स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है कि राज्य–केंद्रित यथार्थवाद की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति बहुत अधिक सूक्ष्म, अंतर्निहित और क्वांटम रूप से परस्पर जुड़ी हुई प्रणाली है। वर्तमान में चल रहे इजराइल–अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध ने इस सिद्धांत को व्यावहारिक रूप से समकालीन संदर्भों में और ज्यादा व्यावहारिक रूप से स्थापित कर दिया है। वास्तव में शास्त्रीय भू–राजनीति और नव–यथार्थवाद जैसे सिद्धांत आज की अत्यधिक–अंतर्निहित दुनिया की व्याख्या करने में नितांत असमर्थ है। जब हम होर्मुज़ जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक ''चोकपॉइंट'' (Chokepoint) पर उत्पन्न होने वाले संकट को क्वांटम अंतर्राष्ट्रीय संबंधों (Quantum IR) के लेंस से देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल तेल टैंकरों और जहाजों की भौतिक आवाजाही का रुकना मात्र नहीं है, बल्कि यह एक ''मैक्रो–क्वांटम एंटैंगलमेंट'' का प्रत्यक्ष और ज्वलंत उदहारण है। एक क्वांटम नोड (जैसे कि होर्मुज़) पर होने वाली कोई भी सामरिक हलचल या सैन्य ''ऑब्जर्वेशन'' तात्कालिक रूप से दुनिया के दूसरे छोर पर चाहे वह टोक्यो का ऊर्जा बाजार हो, नई दिल्ली की मुद्रास्फीति दर हो, या यूरोपीय संघ की कूटनीतिक गणनाएं हों एक अदृश्य लेकिन अत्यंत शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न करती है। इस स्थिति में, ईरान की क्षेत्रीय आक्रामकता की धारणा या अमेरिका–इज़राइल की निवारक रणनीतियां केवल स्थानीय या भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे वैश्विक चेतना और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के ''वेव फंक्शन'' (Wave Function) को तुरंत ढहा (Collapse) देती हैं। यह घटनाक्रम यह अकाट्य रूप से सिद्ध करता है कि आधुनिक राष्ट्र–राज्य वास्तव में एक प्रकार से विशाल ''क्वांटम प्रणालियां'' हैं, जहाँ भौतिक दूरी या भौगोलिक सीमाओं का शास्त्रीय अर्थ लगभग समाप्त हो चुका है, और एक भू–राजनीतिक धुरी की चिंता तुरंत वैश्विक

आपूर्ति श्रृंखलाओं के पतन के रूप में परिलक्षित होती है।

भारत–चीन संबंधों में क्वांटम प्रतिमानः विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य

अलेक्जेंडर वेंड्ट की ''क्वांटम सत्तामीमांसा'' और ''क्वांटम माइंड'' के सैद्धांतिक ढांचे को इक्कीसवीं सदी के भारत–चीन संबंधों (21st Century India-China Relations) पर लागू करने से दोनों एशियाई दिग्गजों के बीच चल रही भू–राजनीतिक और कूटनीतिक जटिलताओं का एक अभूतपूर्व और गहन विश्लेषण प्राप्त होता है। पारंपरिक नव–यथार्थवादी (Neo-realist) परिप्रेक्ष्य, जो केनेथ वाल्ट्ज़ जैसे विचारकों द्वारा प्रतिपादित किया गया था और जो राष्ट्र–राज्यों को शक्ति–संचय की अंधी दौड़ में लगी स्वायत्त ''बिलियर्ड बॉल्स'' के रूप में देखता है, भारत और चीन के बीच की उस सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक और वैचारिक अन्योन्याश्रयता को समझाने में पूरी तरह विफल रहता है जो उनके वर्तमान द्विपक्षीय संबंधों को परिभाषित करती है। वेंड्ट के प्रतिमान का उपयोग करते हुए, हम देख सकते हैं कि भारत और चीन केवल भौतिक सीमाओं, व्यापारिक घाटे या जनसांख्यिकीय आंकड़ों के माध्यम से एक–दूसरे से नहीं जुड़े हैं, बल्कि वे ''क्वांटम उलझाव'' की एक अत्यंत जटिल स्थिति में हैं। इस क्वांटम उलझाव का सबसे ज्वलंत और रणनीतिक उदाहरण चीन की महत्वाकांक्षी ''बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव'' (Belt and Road Initiative - BRI) परियोजना और उसके प्रति भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रिया है। जब चीन यूरेशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए अरबों डॉलर का निवेश करता है, तो यह केवल एक भौतिक या आर्थिक कृत्य नहीं होता है। क्वांटम उलझाव के सिद्धांत के अनुसार, बीजिंग द्वारा ग्वादर (पाकिस्तान) या हंबनटोटा (श्रीलंका) में लिया गया एक नीतिगत निर्णय, बिना किसी सीधे भौतिक संपर्क या युद्ध के, नई दिल्ली में भारतीय नीति निर्माताओं की रणनीतिक चेतना और राष्ट्रीय सुरक्षा धारणाओं को तत्काल रूप से बदल देता है। भारत द्वारा ''क्वाड'' (QUAD) जैसी बहुपक्षीय व्यवस्थाओं में सक्रिय भागीदारी या ''एक्ट ईस्ट पॉलिसी'' (Act East Policy) का निरंतर विस्तार, चीन की कार्रवाइयों के जवाब में उत्पन्न उसी ''नॉन–लोकल'' (non-local) प्रभाव का प्रकटीकरण है, जहां एक राष्ट्र की भू–आर्थिक महत्वाकांक्षाएं दूसरे राष्ट्र की सामरिक पहचान को सह–निर्मित (co-constitute) कर रही हैं। यह अंतर्संबंध दर्शाता है कि दोनों राष्ट्र एक साझा अर्थ–निर्माण प्रणाली (shared meaning-making system) में गुंथे हुए हैं, जहाँ ''चीनी उदय'' (Chinese rise) का विचार ही ''भारतीय सामरिक स्वायत्तता'' (Indian strategic autonomy) की समकालीन परिभाषा को आकार देता है।

दूसरी ओर, वेंड्ट का ''सुपरपोज़िशन'' (Superposition) और ''वेव फंक्शन कोलैप्स'' (Wave Function Collapse) का सिद्धांत भारत–चीन सीमा विवादों, विशेष रूप से 2020 के गलवान घाटी (Galwan Valley) संकट या डोकलाम (Doklam) गतिरोध के दौरान कूटनीतिक और सैन्य निर्णय लेने की प्रक्रिया का अत्यंत सूक्ष्म और सटीक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जब दोनों देशों की सेनाएं वास्तविक नियंत्रण रेखा (Line of Actual Control - LAC) पर आमने–सामने होती हैं, तो शास्त्रीय भौतिकवाद यह मान लेगा कि उनके कार्य पूर्व–निर्धारित भौतिक लाभों या विशुद्ध रूप से गेम थ्योरी (Game Theory) के तर्कसंगत लाभ–हानि मैट्रिक्स द्वारा निर्देशित होते हैं, लेकिन क्वांटम चेतना के दृष्टिकोण से, संकट के चरम क्षणों में, भारतीय और चीनी कूटनीतिज्ञों तथा सैन्य कमांडरों का मस्तिष्क रणनीतिक संभावनाओं के एक विशाल ''सुपरपोज़िशन'' में कार्य करता है। जब तक कोई स्पष्ट सैन्य आदेश नहीं दिया जाता या कूटनीतिक बयान जारी नहीं होता, तब तक शांतिपूर्ण वापसी (disengagement), सीमित सैन्य संघर्ष, या पूर्ण पैमाने पर युद्धकृये सभी संभावनाएं एक साथ एक ही मानसिक वास्तविकता में सह–अस्तित्व में रहती हैं। बातचीत की मेज पर बैठा एक चीनी राजनयिक या भारतीय विदेश मंत्री केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान नहीं कर रहा होता है; उनका हर शब्द, हर कूटनीतिक इशारा और हर मौन उस क्वांटम अवस्था को किसी एक निश्चित वास्तविकता में ढहने (collapse) के लिए मजबूर कर रहा होता है। गलवान संकट के दौरान, दोनों पक्षों के नेतृत्व द्वारा ''रणनीतिक अस्पष्टता'' (strategic ambiguity) बनाए रखना वास्तव में इसी सुपरपोज़िशन को लंबा खींचने का एक सचेत कूटनीतिक प्रयास था, ताकि दूसरे पक्ष को अनिश्चितता के मनोवैज्ञानिक जाल में फंसाया जा सके। जब अंततः सैन्य झड़प हुई या जब दोनों पक्षों ने पीछे हटने के समझौते पर हस्ताक्षर किए, तो वह उस अस्थिर क्वांटम अवस्था का एक ठोस कूटनीतिक वास्तविकता में ''ढहना'' था। यह प्रक्रिया यह सिद्ध करती है कि विदेश नीति केवल रक्षा बजट या मिसाइलों की संख्या से तय नहीं होती, बल्कि यह निर्णयकर्ताओं की चेतना और उस क्षणिक क्वांटम ढहने पर निर्भर करती है, जहाँ हजारों संभावित रणनीतिक भविष्य एक ही वर्तमान में सिमट जाते हैं।

इसके अतिरिक्त, वेंड्ट द्वारा उद्धृत ''मालिक–गुलाम'' (master-slave) द्वंद्वात्मकता का क्वांटम विस्तार 21वीं सदी में ''एशियाई सदी'' (Asian Century) के विमर्श में भारत और चीन की स्थिति पर गहराई से लागू होता है। भारत और चीन के बीच की वर्तमान रणनीतिक प्रतिस्पर्धा केवल भू–भाग के भौतिक नियंत्रण के लिए नहीं है, बल्कि ''एशियाई नेतृत्व'' और ''वैश्विक

शक्ति'' की पहचान स्थापित करने के लिए एक निरंतर क्वांटम संघर्ष है। जैसे एक क्वांटम कण का ''स्पिन'' (spin) दूसरे कण के ''स्पिन'' द्वारा निर्धारित होता है, वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में चीन की ''महान शक्ति'' (Great Power) की पहचान भारत की ''उभरती हुई बहुध्रुवीय शक्ति'' (Emerging Multipolar Power) के दर्जे के साथ जटिल रूप से उलझी हुई है। यदि चीन खुद को अमेरिका के एक वैश्विक प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित करना चाहता है, तो उसे क्षेत्रीय स्तर पर भारत की शक्ति को संतुलित या सीमित करना होगा; वहीं दूसरी ओर, भारत की ''विश्वमित्र'' या ग्लोबल साउथ (Global South) के मुखर नेता की स्व–छवि चीन के प्रभुत्ववादी रवैये के सीधे विरोध में आकार लेती है। जब चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और ''टेक्नो–सिक्योरिटी'' (techno-security) मॉडल पर अपना एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास करता है, तो यह केवल आर्थिक विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी अर्थ–व्यवस्था का निर्माण है जो भारत को सामरिक परिधि में धकेलने का मनोवैज्ञानिक दबाव डालती है। इसके जवाब में, भारत का ''आत्मनिर्भर भारत'' अभियान या स्वतंत्र आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण केवल आर्थिक नीतियां नहीं हैं, बल्कि वे उस साझा क्वांटम संवाद में अपनी अलग सत्ता और अर्थ थोपने के सचेत प्रयास हैं। वेंड्ट के प्रतिमान के माध्यम से यह बिल्कुल स्पष्ट होता है कि भारत और चीन एक–दूसरे के रणनीतिक दर्पण हैं एक का सुरक्षा भय दूसरे के सामरिक विस्तार का प्रत्यक्ष परिणाम है। दोनों राज्य एक–दूसरे से स्वतंत्र या अलग–थलग नहीं रह सकते; वे एक निरंतर, अदृश्य और मनोवैज्ञानिक ''नॉन–लोकल'' जाल में फँसे हुए हैं, जहाँ किसी भी एक पक्ष की वैचारिक या कूटनीतिक गतिशीलता तुरंत दूसरे पक्ष के राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य को पुनर्गठित कर देती है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि भारत–चीन संबंध केवल एक यथार्थवादी ''सुरक्षा दुविधा'' (security dilemma) नहीं है, बल्कि एक गहन क्वांटम उलझाव है जिसे केवल चेतना, धारणाओं और अर्थों के साझा निर्माण के माध्यम से ही पूरी तरह से समझा जा सकता है।

निष्कर्ष

क्वांटम अन्तर्रष्ट्रीय राजनीतिक सिद्धांत के प्रतिमान और सिद्धांत को वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों और कूटनीतिक वार्ताओं में यदि लागू किया जाए तो यह आज की जटिल होती अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक का साधन बन सकता है, क्योंकि पारंपरिक कूटनीति पुराने प्रतिमानों और विचारधाराओं पर आधारित है जहां यह माना जाता है कि हर क्रिया की एक निश्चित और प्रतिरोध की प्रतिक्रिया होती है। लेकिन आज की इस जटिल अनिश्चित और बहुआयामी दुनिया में प्रत्येक देश न केवल एक दूसरे से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है, अपितु इसकी जटिलता एक प्रकार से क्वांटम उलझाओ के तरह व्यवहार करती हैं। आज प्रत्येक देश का व्यवहार न केवल अनिश्चित है अपितु एक दूसरे से जुड़ा हुआ भी है, एक देश में लिया गया चाहे घरेलू निर्णय हो या अंतरराष्ट्रीय, ठीक उसी समय अनिर्धारित और सुनिश्चित प्रभाव अवश्य होता है । इस पूरे प्रतिमान को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सिद्धांतों के साथ–साथ यदि इस क्वांटम अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सिद्धांतों का उपयोग किया जाए तो इन बहूआयामी और जटिल अंतरराष्ट्रीय राजनीति को समझने में मदद मिल सकती है। वास्तव में कूटनीतिज्ञों और रणनीतिक नीति निर्माताओं द्वारा इस क्वांटम सिद्धांतों का अनुप्रयोग उन्हें परंपरागत जड़ताओं और शास्त्रीय प्रतिमानों की वैचारिक सीमाओं से मुक्त करता है। वर्तमान भू–राजनीतिक परिवेश में अंतर्राष्ट्रीय राजनितिक सिद्धांतो को अब केवल नियतिवादी भविष्यवाणियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें जटिल होते संभावनाओं के विविध परिदृश्यों का गहन विश्लेषण करना चाहिए। क्वांटम अंतर्राष्ट्रीय राजनितिक सिद्धांत का मौलिक रूप में यह प्रतिपादित करता है कि जब राष्ट्र–राज्य सूचनात्मक और संरचनात्मक रूप से एक–दूसरे के साथ ''एंटैंगल्ड'' होते हैं, तो वे विनाशकारी संघर्ष के स्थान पर सहयोगात्मक विकल्प का चयन करते हैं। इसका सबसे बड़ा व्यावहारिक उपयोग कूटनीतिक वार्ताओं में ''सुपरपोजिशन'' के सिद्धांत को अपनाना है। सरल भाषा में इसे ''रणनीतिक अस्पष्टता'' (Strategic Ambiguity) कहा जा सकता है। पुरानी कूटनीति में वार्ताकार अपनी शर्तें पहले ही साफ कर देते थे और एक ''लक्ष्मण रेखा'' खींच देते थे, जिससे अक्सर बातचीत टूट जाती थी और युद्ध की नौबत आ जाती थी लेकिन क्वांटम नजरिया कहता है कि एक समझदार कूटनीतिज्ञ को अंतिम समय तक अपने पत्तों को पूरी तरह से नहीं खोलना चाहिए और एक ही समय में सहयोग, नरमी और कड़े रुख के कई विकल्पों को खुला रखना चाहिए। इसका सबसे अच्छा उदाहरण ताइवान को लेकर अमेरिका की नीति है। अमेरिका ने आज तक जानबूझकर यह साफ नहीं किया है कि अगर चीन ताइवान पर हमला करता है, तो वह बीच में आएगा या नहीं। इस जानबूझकर रखी गई ''अस्पष्टता'' (सुपरपोजिशन) के कारण ही चीन हमला करने से डरता है और ताइवान भी कोई ऐसा कदम नहीं उठाता जिससे युद्ध भड़क जाए। भविष्य की वार्ताओं में, चाहे वह जलवायु परिवर्तन पर हो या परमाणु हथियारों पर, वार्ताकारों को यह समझना होगा कि इंसानी दिमाग कोई मशीन नहीं है। जानकारी किस समय और किस माहौल में दी जा रही है, इससे फैसले बदल सकते हैं और यही क्वांटम कूटनीति का असली व्यावहारिक रूप है। अतः भारत को भी अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इसी प्रकार से सुपरपोजिशन की स्थिति अपनानी चाहिए जहां पर वह अपने राष्ट्रीय

हितों को लेकर हमेशा स्पष्ट रहे और साथ ही साथ किसी ऐसे लक्ष्मण रेखा ना खींचे जो आगे चलकर के उसके लिए बाधा या एक नैतिक दुविधा न पैदा कर दे। विशेष कर चीन के साथ अपने संबंधों को लेकर भारत को इस रणनीतिक सिद्धांत को अपनाने की सबसे ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि न केवल भारत चीन के साथ आर्थिक रूप से एंटेंगल है, बल्कि उसकी अपनी अर्थव्यवस्था तथा सामरिक रणनीति क्षमता भी अभी किसी प्रत्यक्ष संघर्ष की अनुमति नहीं देते हैं।

संदर्भ सूची

1. Bajpai, Kanti. (2021) *India Versus China: Why they are Not Friends.* Juggernaut Books, New Delhi, 1st Edition, p. 210-215.
2. Der Derian, James and Alexander Wendt (Eds.) (2022) Quantum International Relations: A Human Science for World Politics. Oxford University Press, Oxford, United Kingdom, p. 1-15.
3. Farrell, Henry and Abraham L. Newman. (2019) *Weaponized Interdependence: How Global Economic Networks Shape State Coercion.* International Security, Vol. 44, No. 1, MIT Press, Cambridge, Massachusetts, p. 42-79.
4. Garver, John W. (2021) China's Quest: The History of the Foreign Relations of the People's Republic of China. Oxford University Press, New York, 2nd Edition, p. 45-52.
5. Mearsheimer, John J. (2018) *The Great Delusion: Liberal Dreams and International Realities.* Yale University Press, New Haven, Connecticut, p. 142-148.
6. Mitra, Subrata K. (2023) Revisiting the Asian Century: Quantum Perceptions in Indo-China Diplomacy, *Journal of Asian Security and International Affairs,* Vol. 10, No. 3, Sage Publications, New Delhi, p. 341-356.
7. Pant, Harsh V. (2022) *India's Foreign Policy: An Overview.* Manchester University Press, Manchester, United Kingdom, p. 112-118.
8. The Hindu. (2025, February 14) Strategic Entanglements: The BRI and India's Foreign Policy Posture, *The Hindu Editorial Section,* New Delhi Edition, p. 8.
9. Waltz, Kenneth N. (1979) *Theory of International Politics.* Waveland Press, Inc. (reprint), Long Grove, Illinois, USA, p. 88-93.
10. Wendt, Alexander (1999) *Social Theory of International Politics.* Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom, p. 24-26.
11. Wendt, Alexander (2015) *Quantum Mind and Social Science: Unifying Physical and Social Ontology.* Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom, p. 32-35, 145-148.
12. Wendt, Alexander. (2015) *Quantum Mind and Social Science: Unifying Physical and Social Ontology.* Cambridge University Press, 1st Edition, Cambridge, United Kingdom, p. 145-152, 180-185.
13. Wendt, Alexander. (2015) *Quantum Mind and Social Science: Unifying Physical and Social Ontology.* Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom, p. 250-255.
14. Wight, Colin. (2006) *Agents, Structures and International Relations: Politics as Ontology.* Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom, p. 112-116.
15. Zanotti, Laura. (2019) Ontological Entanglements, Agency and Ethics in International Relations: Exploring the Crossroads. Routledge, London, United Kingdom, p. 45-48.

****